पाठ - 28

बंकिमचंद्र चटर्जी

वंदे मातरम्!

सुजलाम, सुफलाम् मलयज शीतलाम्.....गीत के रचयिता बंकिमचंद्र चटर्जी भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में जन-जन के प्रेरणास्रोत थे। इनका जन्म 26 जून, 1838 को वर्तमान पश्चिम बंगाल राज्य के चैबीस परगना जनपद के कंथलपाड़ा में एक परंपरावादी एवं समृद्ध परिवार में हुआ। बचपन से ही बंकिमचंद्र की रुचि संस्कृत भाषा में थी। इनकी शिक्षा बांग्ला भाषा के साथ-साथ अंग्रेजी एवं संस्कृत में हुई। बंकिमचंद्र एक मेधावी और परिश्रमी छात्र थे। उन्होंने वर्ष 1858 में बी0ए0 की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की और कलकत्ता विश्वविद्यालय से पास होने वाले प्रथम भारतीय स्नातक बने। शिक्षा समाप्ति के तुरंत बाद ही पिता जी की आज्ञा का पालन करते हुए इन्होंने 1858 में ही सरकारी सेवा में डिप्टी मजिस्टे[a]ट का पदभार ग्रहण किया। सरकारी सेवा में रहते हुए इन्होंने तत्कालीन बंगाल के विभिन्न जिलों में सेवाएँ दी। बंकिमचंद्र प्रशासनिक समस्याओं को सुलझाने में अपनी कुशलता, कर्मठता और मानवीय गुणों से ओत-प्रोत सरकारी कर्मचारी के रूप में प्रसिद्ध थे। कुछ समय तक बंकिमचंद्र बंगाल सरकार के सचिव पद पर भी कार्यरत रहे। इन्हें 'राय बहादुर' और सी0आई0ई0 की उपाधियों से भी विभूषित किया गया। सरकारी सेवा से बंकिमचंद्र 1891 में सेवानिवृत्त हो गए।

सरकारी सेवा में रहते हुए बंकिमचंद्र ने 1857 का भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष अपनी आँखों से देखा था। शासन प्रणाली में वर्ष 1858 में आकस्मिक परिवर्तन हुआ था। भारत की शासन व्यवस्था ईस्ट इण्डिया कंपनी के हाथ से सीधे महारानी विक्टोरिया के नियंत्रण में आ गई। बंकिमचंद्र शासकीय सेवा में रहते हुए किसी आंदोलन में प्रत्यक्ष रूप से भाग नहीं ले सकते थे। अतः उन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन के लिए जन-जागरण का संकल्प लिया और इसके लिए इन्होंने साहित्य को माध्यम बनाया।

बंकिमचंद्र चटर्जी ने यद्यपि आजीविका के लिए सरकारी सेवा की, किंतु इनमें स्वदेश प्रेम, राष्ट्रीयता की भावना, स्वभाषा प्रेम कूट-कूट कर भरा था। युवावस्था में ही बंकिमचंद्र जी ने अपने एक मित्र का पत्र बिना पढ़े ही मात्र इसलिए वापस कर दिया क्योंकि वह अंग्रेजी भाषा में लिखा था। इतना ही नहीं इन्होंने पत्र पर यह टिप्पणी भी की कि 'अंग्रेजी न तो तुम्हारी मातृभाषा है और न ही मेरी।' सरकारी सेवा में रहते हुए भी बंकिमचंद्र कभी भी अंग्रेजों के दबाव में नहीं आए।

बंकिमचंद्र चटर्जी बांग्ला भाषा के प्रतिष्ठित कवि व उपन्यासकार थे। आधुनिक युग में बांग्ला साहित्य का उत्थान उन्नीसवीं सदी के मध्य से आरंभ होता है। रवींद्र नाथ टैगोर के पूर्ववर्ती बांग्ला साहित्यकारों में बंकिमचंद्र का अद्वितीय स्थान है। बांग्ला साहित्य में जनमानस तक पैठ बनाने वाले साहित्यकारों में बंकिमचंद्र चटर्जी पहले साहित्यकार थे।

बंकिमचंद्र चटर्जी ने कुछ कविताओं की रचना करके साहित्य के क्षेत्र में प्रवेश किया। उस काल में बांग्ला भाषा में गद्य, उपन्यास व कहानी जैसी विधाएँ कम प्रचलित थीं। बंकिमचंद्र चटर्जी ने इस दिशा में पथ-प्रदर्शक की भूमिका निभाई। इन्होंने मात्र 27 वर्ष की आयु में ही 'दुगर्शेनंदिनी' नामक उपन्यास की रचना कर साहित्य के क्षेत्र में ख्याति प्राप्त की। 'बंगदर्शन' नामक साहित्यिक पत्र का प्रकाशन भी इन्होंने किया। गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर ने बंगदर्शन पत्र में लेख लिखकर ही साहित्य के क्षेत्र में प्रवेश किया था। वे बंकिमचंद्र को अपना गुरु मानते हुए कहते भी हैं कि-'बंकिम बांग्ला लेखकों के गुरु और बांग्ला पाठकों के मित्र हैं।' बंकिम जी के अन्य उपन्यास कपालकुंडला, मृणालिनी, विषवृक्ष, रजनी आदि भी प्रकाशित हुए। राष्ट्रीय दृष्टिकोण से उनका सर्वाधिक प्रसिद्ध उपन्यास 'आनंदमठ' है। इसी उपन्यास में सर्वप्रथम 'वंदे मातरम्' गीत प्रकाशित हुआ था। ऐतिहासिक और सामाजिक ताने-बाने से युक्त इस उपन्यास ने तत्कालीन भारत में राष्ट्रीयता की भावना जागृत करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। जन-जन के बीच राष्ट्रप्रेम की भावना का संचार होने लगा। बंकिम जी द्वारा दिए गए गीत 'वंदे मातरम्' ने संपूर्ण स्वतंत्रता संग्राम को न केवल एक नई चेतना से भर दिया, अपितु भारतवासियों के लिए आजादी का पर्याय भी बन गया।

'वंदे मातरम्' गीत 1896 के कोलकाता के कांग्रेस अधिवेशन में सर्वप्रथम गाया गया। वर्तमान में 'वंदे मातरम' भारत का 'राष्ट्र गीत' है।

बंकिमचंद्र एक साहित्यकार होने के साथ-साथ एक महान देशभक्त भी थे। आनंदमठ के माध्यम से उन्होंने देश के कोने-कोने में वंदे मातरम् के उद्घोष को गुंजायमान किया और

राष्ट्रभावना को जागृत किया। उन्होंने एक अंग्रेज कर्नल पर एक भारतीय का अपमान करने के विरोध में दावा भी ठोंका। इस घटना ने उस

अधिकारी को माफी माँगने पर मजबूर कर दिया।

सरकारी सेवा से सेवानिवृत्त होने के समय से ही बंकिमचंद्र का स्वास्थ्य साथ नहीं दे रहा था। अंततः 8 अप्रैल, 1894 को इस साहित्यसेवी, देशभक्त का देहावसान हो गया। चिरनिद्रा में उनके विलीन हो जाने के बाद भी राष्ट्र गीत 'वंदे मातरम्' के माध्यम से भारतीय जनमानस उन्हें चिरकाल तक याद रखेगा।

अभ्यास

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1. बंकिमचंद्र चटर्जी का जन्म कब और कहाँ हुआ था?
2. बंकिमचंद्र ने आजादी की लड़ाई में जन-जागरण हेतु किसे माध्यम बनाया?
3. 'वंदे मातरम्' गीत सर्वप्रथम कब और कहाँ गाया गया था?
4. 'वंदे मातरम्' गीत बंकिमचंद्र की किस रचना से लिया गया है?
5. बंकिमचंद्र ने अपने मित्र का पत्र बिना पढ़े क्यों वापस कर दिया?